Yaade Makka w Madina (Hindi)

तहरीरे अमीरे अहले सुन्नत क़िस्त : 2

हफ़्तावार रिसाला : 307
Weekly Booklet : 307

अमीरे अहले सुन्नत हज़रते अल्लामा मौलाना मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دامت برکاتہم العالیہ की सफ़रे मदीना के दौरान हाथ से लिखी हुई तहरीरों (Hand Writing) का तस्वीरी एलबम

बनाम

यादे मक्का व मदीना

सफ़हात 32

"الحمد للہ ! इस रिसाले में अमीरे अहले सुन्नत की तक़रीबन 29 साल पुरानी तहरीर भी शामिल है"

पेशकश :

मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या

(दा'वते इस्लामी इन्डिया)

अ़र्ज़े मुअल्लिफ़

نَحْمَدُہٗ وَنُصَلِّیْ وَنُسَلِّمُ عَلٰی رَسُوْلِہِ النَّبِیِّ الْکَرِیْم

अल्लाह वालों के क़लम से जारी होने वाले अल्फ़ाज़ जामेअ़ और पुर असर होने के साथ साथ हमारे लिये मश्अ़ले राह (या'नी रहनुमा उसूल) होते हैं। इन पर अ़मल करने में दोनों जहां की भलाई है। आप के हाथों में मौजूद रिसाला "यादे मक्का व मदीना" अमीरे अहले सुन्नत की उन तह़रीरात का मज्मूआ़ है जो आप ने चन्द माह क़ब्ल उ़म्रह शरीफ़ (1444 हिजरी 2022) के सफ़र के दौरान तरतीब दीं। यक़ीनन मुसल्मान के दिल में ख़ुशी दाख़िल करना बहुत बड़े सवाब का काम है। مَاشَآءَ اللّٰہُ الْکَرِیْم ! अमीरे अहले सुन्नत ने इस मुबारक सफ़र में मुख़्तलिफ़ इस्लामी भाइयों की दिलजूई करते हुए उन के नाम अपने हाथ से चन्द अह़ादीसे मुबारका और रिवायात लिखीं। मज़ीद इस रिसाले "यादे मक्का व मदीना" को इस्मे बा मुसम्मा (या'नी जैसा नाम है वैसा) बनाने के लिये अमीरे अहले सुन्नत के पुराने अस्फ़ारे मदीना की तह़रीरात भी शामिल की गई हैं जैसा कि सफ़ह़ा नम्बर 22 और 24 की तह़रीर तक़रीबन 29 साल और सफ़ह़ा नम्बर 26 की तह़रीर तक़रीबन 23 साल पहले की है। **अल्लाह** पाक की अमीरे अहले सुन्नत पर रह़मत हो और आप के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मौक़अ़ की मुनासबत से हर सफ़ह़े पर मुख़्तलिफ़ रिवायात और ख़ूब सूरत डीज़ाइनिंग की गई है। आप भी अपने दिलों में यादे मक्का व मदीना बढ़ाइये और इस ख़ूब सूरत कलर फ़ुल रिसाले को तक़्सीम कर के ख़ूब सवाब कमाइये। अगर ज़ाइरीने मदीना सफ़रे ह़रमैने त़य्यिबैन में इस तह़रीरी गुलदस्ते को साथ रखें और वक़्तन फ़ वक़्तन मुत़ालआ़ करते रहें तो اِنْ شَآءَ اللّٰہُ الْکَرِیْم वलिय्ये कामिल की तह़रीरात की बरकात से अपने ज़ौक़ो शौक़ को बढ़ता हुवा पाएंगे।

سامانِ مدینہ*

(۲۵ ذوالقعدۃ الحرام ۱۴۳۹ھ)

① رفیق الحرمین ② دو عدد احرام

③ دو نئے سفید لباس ④ دو سفید عمامے، دو سربند، دو سفید ٹوپیاں

تین چھوٹے تولیے (جیب کے) ⑤ سنّت بکس (قفلِ مدینہ کا پیڈ)

⑥ دو مسواکیں ⑦ تیل، کنگھی

⑧ تین الارم گھڑیاں ⑨ چٹائی، تکیہ

⑩ چار چادریں (ایک کتھئی، دو سفید)

⑪ چند بال پوائنٹ ⑫ چند رنگین قلم

⑬ ایک پرانی ڈائری (ضرورتاً تحریری کام کیلئے)

⑭ سُرمے کی سلائی (خاکِ مدینہ کا سُرمہ) ⑮ 33 دانے کی تسبیح، چند کاؤنٹر

⑯ گلے میں لٹکانے کا بیگ ⑰ پانی کی لٹکانے کی بوتل

⑱ احرام کا نائلون کا بیلٹ ⑲ ٹِشو پیپر (ٹائلیٹ کا)

⑳ ۱۰ روپے والے نوٹ (مناسب مقدار میں)

㉑ دو چھوٹے لیٹر پیڈ ㉒ موزے ㉓ ایک جوڑی چپّل

㉔ بیٹھنے کا پٹلہ ㉕ وُضو کا لوٹا ㉖ ضروری ادویہ

㉗ بانٹنے کیلئے طواف کی تسبیحات ㉘ بے خوشبو صابن

مٹّی کی پلیٹ، مٹی کا پیالہ ㉙ کھانے کا سوڈا (دانتوں کیلئے)

㉚ دانتوں سے ریشے نکالنے کیلئے ۔ ㉛ بڑا کین

㉜ ٹارچ ㉝ نمک کی شیشی ㉞ بیگیج پر باندھنے کیلئے ربن ㉟ عطر

(حسبِ ضرورت اشیاء کا انتخاب فرمالیجئے)

● रफ़ीक़ुल ह़रमैन ● दो अ़दद एह़राम ● दो नए सफ़ेद लिबास ● दो सफ़ेद इमामे, दो सरबन्द, दो सफ़ेद टोपियां ● तीन छोटे तोलिये (जेब के) ● सुन्नत बक्स (क़ुफ़्ले मदीना का पेड) ● दो मिस्वाकें, तेल, कंघी ● तीन अलार्म घड़ियां ● चटाई, तक्या ● चार चादरें (एक कथ्थई, दो सफ़ेद) एह़राम में पर्दे में पर्दा के लिये बे सिली चादर ● चन्द बॉल पोइन्ट ● चन्द रंगीन क़लम ● एक पुरानी डायरी (ज़रूरतन तह़रीरी काम के लिये) ● टॉर्च ● नमक की शीशी ● लगेज पर बांधने के लिये रिबिन ● इ़त्र ● बड़ा केन

सुरमे की सलाई (ख़ाके मदीना का सुरमा) ● 33 दाने की तस्बीह़, चन्द काउन्टर ● गले में लटकाने का बेग ● पानी की लटकाने की बोतल ● एह़राम का नायलोन का बेल्ट ● टिशू पेपर (टॉयलेट का) ● 10 रुपै वाले नोट (मुनासिब मिक़्दार में) ● दो छोटे लेटर पेड ● मोज़े ● एक जोड़ी चप्पल ● बैठने का पटला ● वुज़ू का लोटा ● ज़रूरी अदविया ● बांटने के लिये त़वाफ़ की तस्बीह़ात ● बे ख़ुश्बू साबुन ● मिट्टी की प्लेट, मिट्टी का पियाला ● खाने का सोडा (दांतों के लिये) ● दांतों से रेशे निकाले के लिये

* 2018 के सफ़रे मदीना पर रवानगी से क़ब्ल अमीरे अहले सुन्नत के सामान की लिस्ट

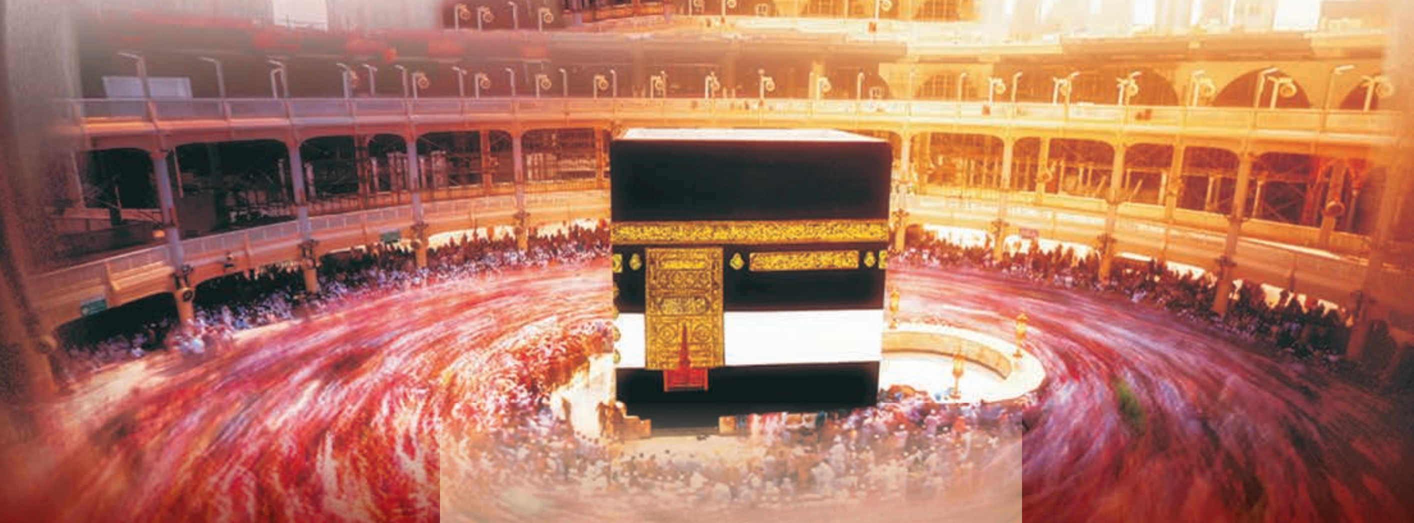

الله

بھاگا ہوا مجرم اپنے مولیٰ کی بارگاہ میں حاضری کیلئے چل پڑا ہے۔

جو ہیبت سے رُکے مجرم
تو رحمت نے کہا بڑھ کر
چلے آؤ! چلے آؤ! یہ گھر
رحمٰن کا گھر ہے

سگِ مدینہ محمد الیاس عطار قادری
۲ ذوالحجۃ الحرام ۱۴۲۹ھ
12-10-18

(دورانِ پرواز.... سوئے مدینہ.... کی تحریر)

भागा हुवा मुजरिम अपने मौला की बारगाह में ह़ाज़िरी के लिये चल पड़ा है ।

जो हैबत से रुके मुजरिम तो रह़मत ने कहा बढ़ कर
चले आओ ! चले आओ ! येह घर रह़मान का घर है

(दौराने परवाज़.... सूए मदीना.... की तह़रीर)

यादे सफ़रे मदीना

फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:**
''जो शख़्स अपने ग़ुस्से को रोकेगा **अल्लाह** पाक क़ियामत के रोज़ उस से अपना अ़ज़ाब रोक देगा।'' (रफ़ीक़ुल ह़रमैन, स. 15)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الْكَرِيْم येह अल्फ़ाज़ लिखते वक़्त हमारा हवाई जहाज़ अ़रब शरीफ़ की फ़ज़ाओं में झूमता हुवा सूए जद्दा शरीफ़ रवां दवां है।

लो आया कि अब आया जद्दा का साह़िल
अब आएगा मक्का, चलेंगे मदीना

یادِ سفرِ مدینہ

اللہ

فرمانِ آخری نبی صلی اللہ علیہ والہ وسلم :
" جو شخص اپنے غصے کو روکے گا اللہ پاک قیامت کے روز اُس سے اپنا عذاب روک دے گا۔" (رفیق الحرمین ص 15)
الحمد للہ الکریم یہ الفاظ لکھتے وقت ہمارا ہوائی جہاز عرب شریف کی فضاؤں میں جھومتا ہوا سوئے جدّہ شریف رواں دواں ہے۔

لو آیا کہ اب آیا جدّہ کا ساحل
اب آئے گا مکہ، چلیں گے مدینہ

(حاجی محمد امین عطاری کی خدمت میں۔
سفرِ مدینہ کی یادگار سوغات)

صلوا علی الحبیب صلی اللہ علی محمد

साहिले जद्दा

اللہ

"حرمِ مکّہ میں کی جانے والی ایک نیکی لاکھ نیکی کے برابر ہے
اور ایک گناہ لاکھ گنا ہے۔"

الحمد للہ الکریم یہ لکھتے وقت ہمارا
ہوائی جہاز جدّہ شریف کی طرف
محوِ پرواز (یعنی اُڑ رہا) ہے۔

صلّوا علی الحبیب
صلّی اللہ علیٰ محمّد

14-11-22

1444ھ

''ह़रमे मक्का में की जाने वाली एक नेकी लाख नेकी के बराबर है और एक गुनाह लाख गुना है।''

اَلْحَمْدُلِلّٰہِ الْکَرِیْم येह लिखते वक़्त हमारा हवाई जहाज़ जद्दा शरीफ़ की त़रफ़ मह़्वे परवाज़ (या'नी उड़ रहा) है।

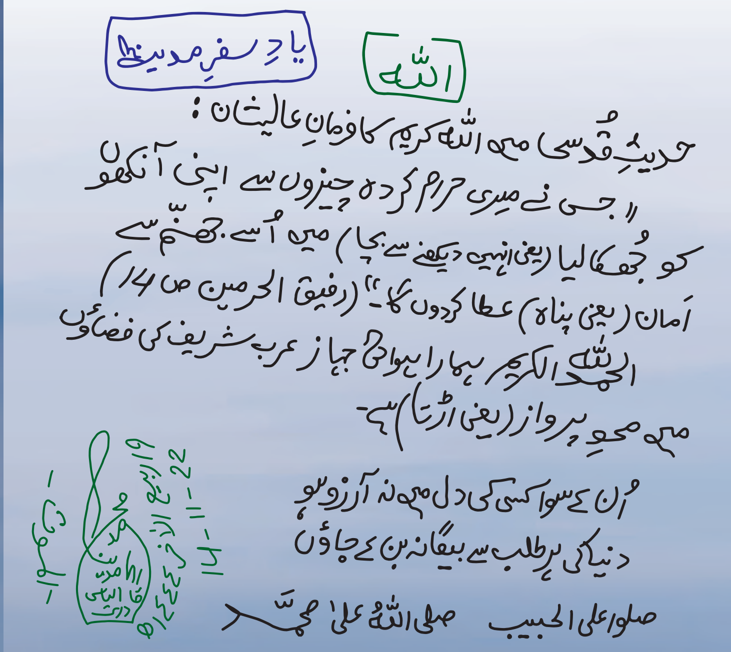
يادِ سفرِ مدینہ

اللہ

حدیثِ قُدسی میں اللہ کریم کا فرمانِ عالیشان :

"جس نے میری حرام کردہ چیزوں سے اپنی آنکھوں کو جُھکا لیا (یعنی انہیں دیکھنے سے بچا) میں اُسے جہنّم سے اَمان (یعنی پناہ) عطا کردوں گا۔" (رفیق الحرمین ص 14)

الحمد للہ الکریم ہمارا ہوائی جہاز عربِ شریف کی فضاؤں میں محوِ پرواز (یعنی اُڑ رہا) ہے۔

اُن کے سوا کسی کی دل میں نہ آرزو ہو
دنیا کی ہر طلب سے بیگانہ بن کے جاؤں

صلوا علی الحبیب صلی اللہ علی محمد

यादे सफ़रे मदीना

ह़दीसे क़ुदसी में अल्लाह करीम का फ़रमाने आ़लीशान :

''जिस ने मेरी ह़राम कर्दा चीज़ों से अपनी आंखों को झुका लिया (या'नी उन्हें देखने से बचा) मैं उसे जहन्नम से अमान (या'नी पनाह) अ़त़ा कर दूंगा।'' (रफ़ीक़ुल ह़रमैन, स. 14)

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ الْکَرِیْم हमारा हवाई जहाज़ अ़रब शरीफ़ की फ़ज़ाओं में मह़्वे परवाज़ (या'नी उड़ रहा) है।

उन के सिवा किसी की दिल में न आरज़ू हो
दु या की हर त़लब से बेगाना बन के जाऊं

یادِ سفرِ مدینہ　　اللہ

حدیثِ قدسی میں فرمانِ الٰہی : اے آدمی تیرا دین اُس
وقت تک دُرست نہیں ہوسکتا جب تک تیری زبان سیدھی
نہ ہو اور تیری زبان تب تک سیدھی نہیں ہوسکتی
جب تک تُو اپنے ربّ عزوجل سے حیا نہ کرے ۔" (رفیق الحرمین ص 13 تا 14)

الحمدللہ ہمارا ہوائی جہاز سوئے جدّہ
شریف محوِ پرواز (یعنی اُڑ رہا) ہے ۔

حاجی محمد شاہد عطاری (نگرانِ پاک)
کی خدمت میں سوغات

صلّوا علی الحبیب　صلّی اللہ علیٰ محمد

ह़दीसे क़ुदसी में फ़रमाने इलाही : ऐ आदमी तेरा दीन उस वक़्त तक दुरुस्त नहीं हो सकता जब तक तेरी ज़बान सीधी न हो और तेरी ज़बान तब तक सीधी नहीं हो सकती जब तक तू अपने रब عَزَّوَجَلَّ से ह़या न करे।

(रफ़ीक़ुल ह़रमैन, स. 13 ता 14)

اَلْحَمْدُلِلّٰہ ! हमारा हवाई जहाज़ सूए जद्दा शरीफ़ मह़्वे परवाज़ (या'नी उड़ रहा) है।

यादे सफ़रे मदीना

یادِ سفرِ مدینہ

اللہ

الحمدللہ الکریم (یہ لکھتے وقت) ہمارا ہوائی جہاز عرب شریف
کی حدود میں داخل ہو چکا ہے۔ "نیت ہے سفرِ مدینہ
میں اپنے لئے، ہر دعوت اسلامی والے اور والی کیلئے اور تمام
عاشقانِ رسول کیلئے دعا کرتا رہوں گا۔" (مسافر کی دعا قبول
ہوتی ہے۔ "رفیق الحرمین" ص ۱۴ پر ہے: مسلمان کہ مسلمان کیلئے
غیر موجودگی میں جو دعا مانگے وہ قبول ہوتی ہے۔

صلوا علی الحبیب

صلی اللہ علی محمد

यादे सफ़रे मदीना

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ الْکَرِیْم येह लिखते वक़्त हमारा हवाई जहाज़ अ़रब शरीफ़ की हुदूद में दाख़िल हो चुका है। ‘‘निय्यत है सफ़रे मदीना में अपने लिये, हर दा’वते इस्लामी वाले और वाली के लिये और तमाम आ़शिक़ाने रसूल के लिये दुआ़ करता रहूंगा।’’ मुसाफ़िर की दुआ़ क़बूल होती है। ‘‘रफ़ीक़ुल ह़रमैन’’ स. 14 पर है : मुसल्मान कि मुसल्मान के लिये ग़ैर मौजूदगी में जो दुआ़ मांगे वोह क़बूल होती है।

“सोते वक़्त एक बार आयतुल कुरसी हमेशा पढ़िये कि चोर और शैत़ान से हमेशा अमान (या’नी पनाह) है।” (रफ़ीक़ुल ह़रमैन, स. 42)

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ الۡکَرِیۡم सफ़रे मदीना का सिल्सिला जारी है, اِنۡ شَآءَ اللّٰہ الۡکَرِیۡم अ़न्क़रीब हमारा हवाई जहाज़ जद्दा शरीफ़ में उतरने वाला है।

साहि़ले जद्दा पे अब अपना सफ़ीना आ गया
लो वोह मक्का आ गया देखो मदीना आ गया

(اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہ जद्दा शरीफ़ आ गया)

याद सफ़रे मदीना

یادِ سفرِ مدینہ

اللہ

”سوتے وقت ایک بار آیۃُ الکرسی ہمیشہ پڑھیے کہ چور اور شیطان سے ہمیشہ امان (یعنی پناہ) ہے۔“

(رفیقُ الحرمین ص 42)

الحمدللہ الکریم سفرِ مدینہ کا سلسلہ ہے، ان شاء اللہ الکریم عنقریب ہمارا ہوائی جہاز جدّہ شریف میں اترنے والا ہے۔

ساحلِ جدّہ پہ اب اپنا سفینہ آ گیا
لو وہ مکّہ آ گیا دیکھو مدینہ آ گیا

(الحمدللہ جدّہ شریف آ گیا)

محمد الیاس قادری
ربیع الآخر ۱۴۴۴ھ

صلّوا علی الحبیب صلّی اللہ علیٰ محمّد

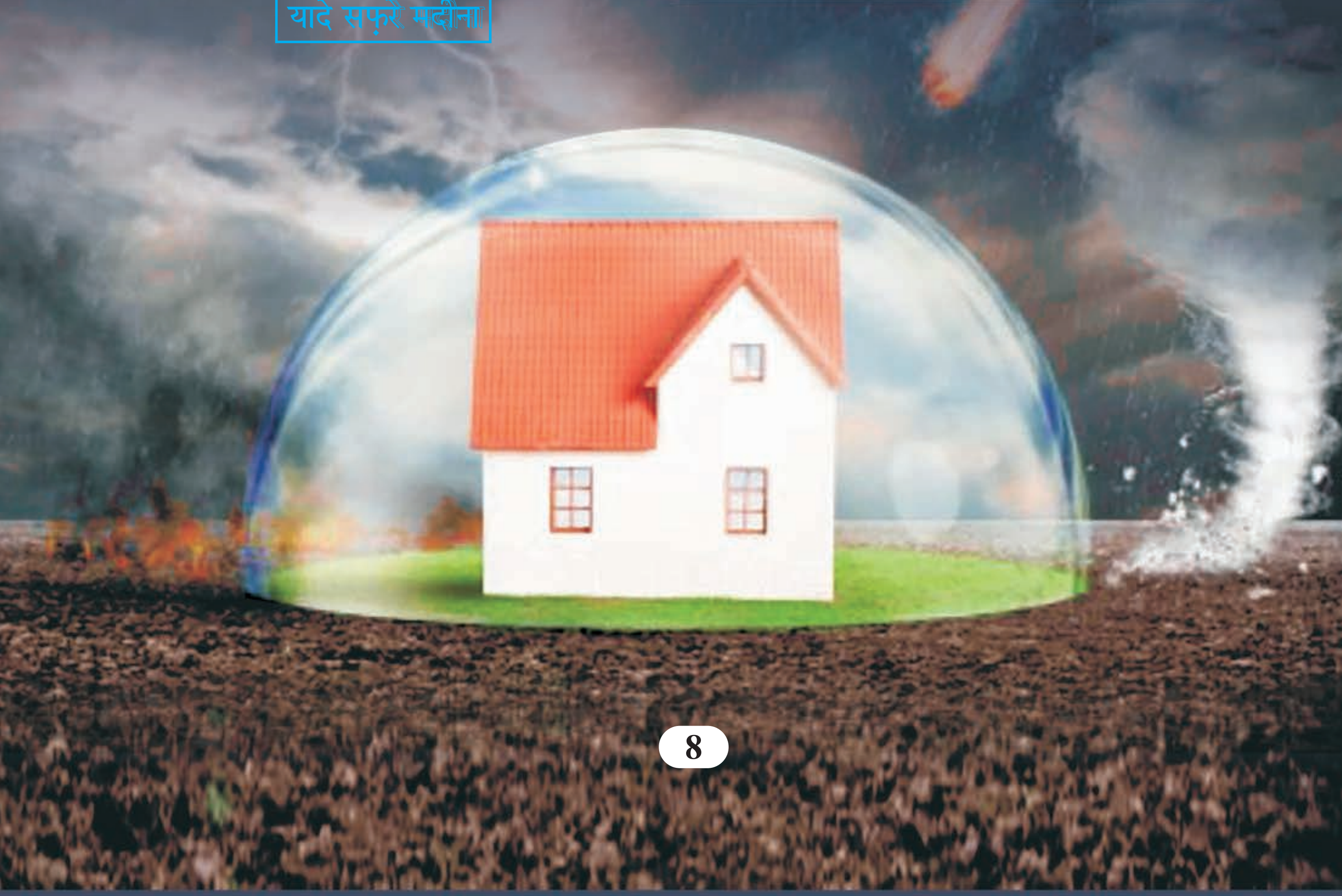

یادِ سفرِ مدینہ

اللہ

"دوسروں سے دعا کروانے سے برکت حاصل ہوتی ہے، اپنے حق میں دوسرے کی دعا قبول ہونے کی زیادہ امید ہوتی ہے۔" (رفیق الحرمین ص 12 تا 13)

(ان شاءاللہ الکریم عنقریب ہمارا ہوائی جہاز جدّہ شریف کے مَطار (یعنی ائیرپورٹ) پر اترنے والا ہے)

صلوا علی الحبیب صلی اللہ علی محمد

محمد الیاس قادری

''दूसरों से दुआ़ करवाने से बरकत ह़ासिल होती है, अपने ह़क़ में दूसरे की दुआ़ क़बूल होने की ज़ियादा उम्मीद होती है।''

(रफ़ीक़ुल ह़रमैन, स. 12 ता 13)

اِنْ شَآءَ اللّٰهُ الْكَرِيْم अ़न्क़रीब हमारा हवाई जहाज़ जद्दा शरीफ़ के मत़ार (या'नी एयरपोर्ट) पर उतरने वाला है।

यादे सफ़रे मदीना

اللہ

یادِ مکۂ مکرمہ
زادھا اللہ شرفاً وّتعظیماً

"آبِ زمزم دیکھنے سے نظر تیز ہوتی اور گناہ دور ہوتے ہیں، تین چلّو سر پر ڈالنے سے ذلت و رسوائی سے حفاظت ہوتی ہے۔" (رفیق الحرمین ص 123)

الحمدللہ الکریم آج عمرہ شریف کرنے کے بعد یہ تحریر تیار کی۔ نگرانِ شوریٰ حاجی عمران مع جملہ اراکینِ شوریٰ (برائے دعوتِ اسلامی) کی خدمت میں بھی اس عمرے کا ایصالِ ثواب پیش کیا۔

20 ربیع الآخر 1444ھ
15-11-22

محمد الیاس قادری

صلوا علی الحبیب
صلی اللہ علی محمد

आबे ज़मज़म का कूंआं

"आबे ज़मज़म देखने से नज़र तेज़ होती और गुनाह दूर होते हैं। तीन चुल्लू सर पर डालने से ज़िल्लतो रुस्वाई से हिफ़ाज़त होती है।"

(रफ़ीक़ुल हरमैन, स. 123)

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ الْکَرِیْم आज उ़मरह शरीफ़ करने के बा'द येह तह़रीर तय्यार की।

यादे मक्कए मुकर्रमा
زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّ تَعْظِيْمًا

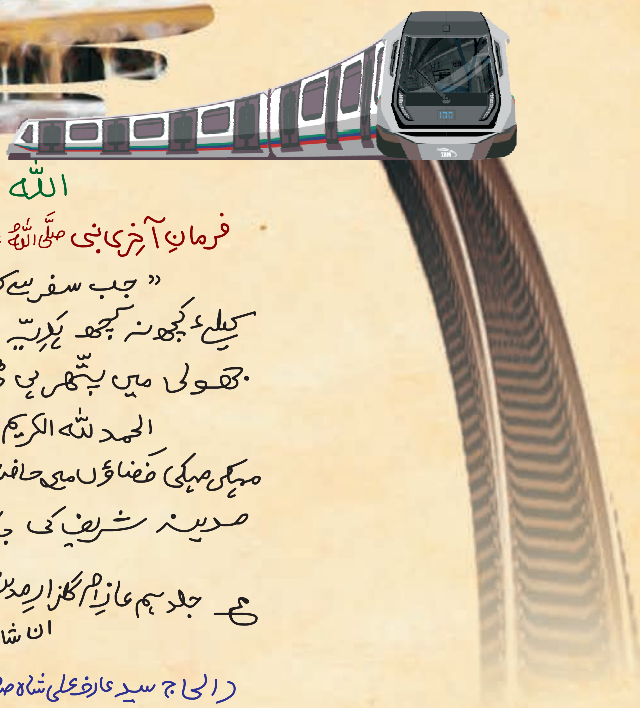

الله

فرمانِ آخری نبی صلَّی اللہُ علیہ واٰلہٖ وسلَّم :

" جب سفر سے کوئی واپس آئے تو گھر والوں
کیلئے کچھ نہ کچھ ہدیّہ (یعنی GIFT) لائے، اگرچہ
جھولی میں پتّھر ہی ڈال لائے۔" (550 سنّتیں اور آداب ص 702)

الحمد للہ الکریم یہ لکھتے وقت مکۂ مکرمہ کی
مہکی مہکی فضاؤں میں حاضر ہوں، ان شاء اللہ الکریم تھوڑی دیر بعد
مدینہ شریف کی جانب روانگی ہے۔

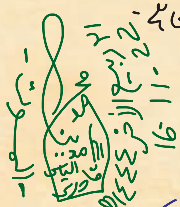

؎ جلد ہم عازمِ گلزارِ مدینہ ہوں گے
ان شاء اللہ الکریم

(الحاج سید عارف علی شاہ صاحب کی
خدمت میں پیش کرنے کیلئے یہ تحریر تیّار کی)

फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:**

‘‘जब सफ़र से कोई वापस आए तो घर वालों के लिये कुछ न कुछ हदिय्या (या’नी GIFT) लाए, अगर्चे झोली में पथ्थर ही डाल लाए।’’ (550 सुन्नतें और आदाब, स. 702)

اَلْحَمْدُلِلّٰہِ الْکَرِیْم येह लिखते वक़्त मक्कए मुकर्रमा की महकी महकी फ़ज़ाओं में ह़ाज़िर हूं, اِنْ شَآءَ اللّٰہُ الْکَرِیْم थोड़ी देर बा’द मदीने शरीफ़ की जानिब रवानगी है।

जल्द हम आ़ज़िमे गुलज़ारे मदीना होंगे اِنْ شَآءَ اللّٰہُ الْکَرِیْم

یا جدارِہ مدینہ

اللّٰہ

فرمانِ آخری نبی صلّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم :

" جو کسی مریض کی عیادت کو جاتا ہے تو آسمان سے ایک پکارنے والا پکارتا ہے : تجھے خوشخبری ہو، تیرا چلنا اچّھا ہے اور تو نے جنّت کی ایک منزل کو اپنا ٹھکانہ بنا لیا ۔ (550 سنّتیں اور آداب ص 72 تا 73)

الحمدللہ الکریم ہماری ٹرین جانبِ مدینہ بڑھتی جارہی ہے اِسی دوران یہ تحریر تیار کی، تحفہ برائے رکنِ شوریٰ

(حاجی فضیل رضا عطاری)

محمد الیاس قادری

مدینہ آنے والا ہے

फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** ‘‘जो किसी मरीज़ की इयादत को जाता है तो आस्मान से एक पुकारने वाला पुकारता है : ‘‘तुझे ख़ुश ख़बरी हो, तेरा चलना अच्छा है और तू ने जन्नत की एक मन्ज़िल को अपना ठिकाना बना लिया।’’ (550 सुन्नतें और आदाब, स. 72 ता 73)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الْكَرِيْم हमारी ट्रेन जानिबे मदीना बढ़ती जा रही है, इसी दौरान येह तह़रीर तय्यार की।

मदीना आने वाला है

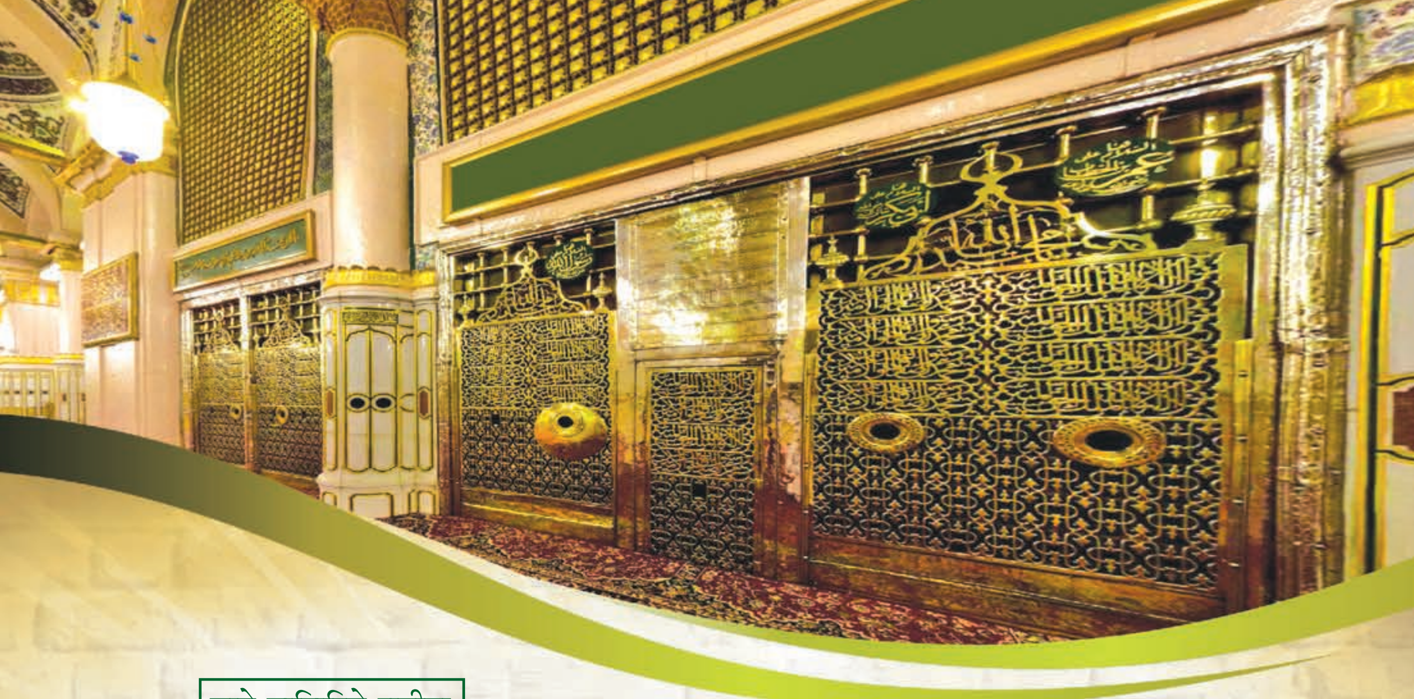

यादे हाज़िरिये मदीना

(क़ब्रे अन्वर में) **अल्लाह** पाक के सब से आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के जिस्मे मुबारक से ज़मीन का जो हिस्सा लगा हुवा है वोह का'बे शरीफ़ से बल्कि अ़र्शो कुरसी से भी अफ़्ज़ल है।

अ़र्शे उ़ला से आ'ला यारे नबी का रौज़ा[1]
है हर मकां से बाला यारे नबी का रौज़ा

1 : रौज़ा या'नी बाग़, शे'र में रौज़े से मुराद वोह जगह है जहां जिस्मे अक़्दस तशरीफ़ फ़रमा है।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الْكَرِيْم इस बार की हाज़िरिये मदीना की आज पहली शब है।

یادِ حاضریِ مدینہ

(قبرِ انور میں) اللہ پاک کے سب سے آخری نبی صلی اللہ علیہ والہ وسلم کے جسم مبارک سے زمین کا جو حصّہ لگا ہوا ہے وہ کعبہ شریف سے بلکہ عرش و کُرسی سے بھی افضل ہے۔

عرشِ عُلیٰ سے اَعلیٰ پیارے نبی کا روضہ
ہے ہر مکاں سے بالا پیارے نبی کا روضہ[1]

[1] روضہ یعنی باغ۔ شعر میں روضہ سے مُراد وہ جگہ ہے جہاں جسمِ اقدس تشریف فرما ہے۔

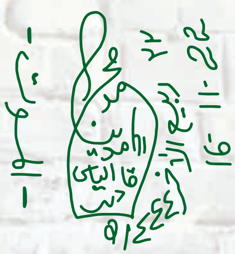

(الحمد للہ الکریم اس بار کی حاضِریِ مدینہ کی آج پہلی شب ہے۔ (یہ تحریر حاجی عبد الحبیب عطاری کیلئے تحفہ ہے)

صلّوا علی الحبیب صلّی اللہ علیٰ محمّد

یادِ فراقِ مدینہ

اللہ

الوداع آہ! شاہِ مدینہ صلی اللہ علیہ والہ وسلم

افسوس وقتِ رخصت نزدیک آ رہا ہے
دل غم کے گہرے دریا میں ڈوبا جا رہا ہے

اللہ کریم آپ کو مع والدۂ مرحومہ و
جملہ خاندان بے حساب
مغفرت سے مشرف فرمائے
آمین۔

آہ! صرف چند گھنٹے بعد
شاید مدینہ چھوٹ جائے۔
صلوا علی الحبیب صلی اللہ علی محمد

17-11-22
۲۲ ربیع الآخر ۱۴۴۴ھ

محمد الیاس قادری

(مفتی حسان مدنی کیلئے تحفہ)

यादे फ़िराक़े मदीना

अल वदाअ़ आह ! शाहे मदीना
صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

अफ़्सोस वक़्ते रुख़्सत नज़्दीक आ रहा है
दिल ग़म के गहरे दरिया में डूबा जा रहा है

अल्लाह करीम आप को मअ़ वालिदए मर्हूमा व जुम्ला ख़ानदान बे हिसाब मग़्फ़िरत से मुशर्रफ़ फ़रमाए । आमीन

आह ! सिर्फ़ चन्द घन्टे बा'द शायद मदीना छुट जाए

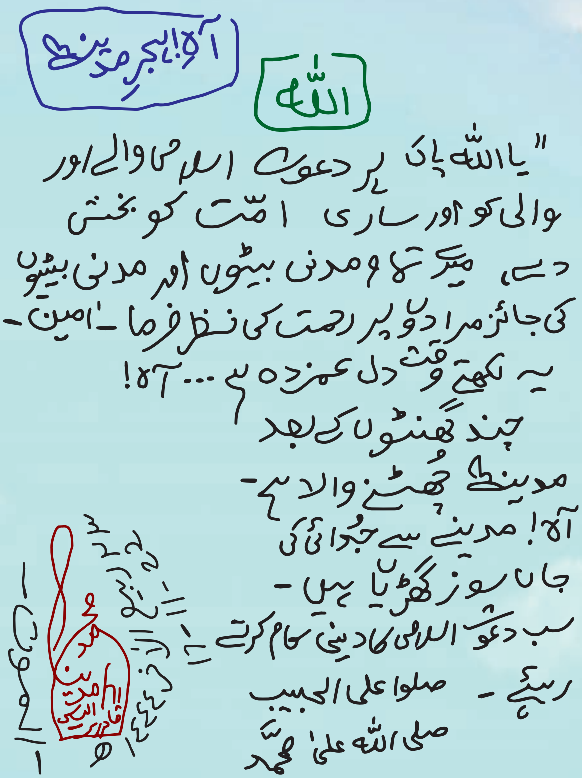
آہ! ہجرِ مدینہ
اللّٰہ
"یا اللہ پاک ہر دعوتِ اسلامی والے اور والی کو اور ساری امّت کو بخش دے، میرے تمام مدنی بیٹوں اور مدنی بیٹیوں کی جائز مرادوں پر رحمت کی نظر فرما۔ آمین۔
یہ لکھتے وقت دل غمزدہ ہے... آہ! چند گھنٹوں کے بعد مدینہ چھٹنے والا ہے۔ آہ! مدینے سے جدائی کی جانسوز گھڑیاں ہیں۔ سب دعوتِ اسلامی کا دینی کام کرتے رہیے۔ صلوا علی الحبیب صلی اللہ علیٰ محمد

आह ! हिज्रे मदीना

"**या अल्लाह** पाक हर दा'वते इस्लामी वाले और वाली को और सारी उम्मत को बख़्श दे, मेरे तमाम मदनी बेटों और मदनी बेटियों की जाइज़ मुरादों पर रह़मत की नज़र फ़रमा।" आमीन

येह लिखते वक़्त दिल ग़मज़दा है... आह! चन्द घन्टों के बा'द मदीना छुटने वाला है। आह मदीने से जुदाई की जांसोज़ घड़ियां हैं। सब दा'वते इस्लामी का दीनी काम करते रहिये।

الله

افسوس! چند گھڑیاں طیبہ کی رہ گئی ہیں
اے آنکھ! خون رو لے تو رونا ہے جس قدر

یہ لکھتے ہوئے
تقریباً ساڑھے چار گھنٹے
بعد (بقیع میں جگہ نہ
ملنے کی صورت میں) شاید مدینہ
چھُٹ جائے گا۔ آہ!

از الحاج سید ابراہیم
شاہ صاحب کی نذر۔۔

۲۱ ربیع الآخر ۱۴۲۶ھ
۲-۶-۱۱-۰۵

مدینہ محمد الیاس قادری

صلوا علی الحبیب صلی اللہ علی محمد

अफ़्सोस ! च द घड़ियां त़यबा की रह गई हैं
ऐ आंख ! ख़ून रो ले तू रोना है जिस क़दर

येह लिखते हुए तक़्रीबन साढ़े चार घन्टे बा'द (बक़ीअ़ में जगह न मिलने की सूरत में) शायद मदीना छुट जाएगा । आह !

صلوا علی الحبیب
صلی اللہ علی محمد

اللہ

آہ! مدینہ چھوٹ گیا

"مدینہ کونین کا نگینہ ہے"۔

حسرت بھرے دلوں سے ہم آئے ہیں لوٹ کر
ہے چاک چاک ہجر میں یہ سینہ و جگر

آہ! مدینہ نگاہوں سے چھپ گیا، ٹرین ہمیں
دور دور کھینچے لیے جا رہی ہے،
آہ! اب جدہ شریف
آئے گا... پھر... پھر...

مدینہ چھوڑ کے ویرانہ ہند کا چھایا
یہ ہائے کیسا حواسوں نے اختلال کیا

आह ! मदीना छुट गया

"मदीना कौनैन का नगीना है ।"

हसरत भरे दिलों से हम आए हैं लौट कर
है चाक चाक हिज्र में येह सीना व जिगर

आह ! मदीना निगाहों से छुप गया,
ट्रेन हमें दूर दूर खींचे लिये जा रही है,
आह ! अब जद्दा शरीफ़ आएगा ।
फिर... फिर...

मदीना छोड़ के वीराना हिन्द का छाया
येह हाए कैसा हवासों ने इख़्तिलाल किया

ہائے! مدینہ چھوٹ گیا

اللہ

حسرت بھرے دلوں سے ہم آئے ہیں لوٹ کر
ہے چاک چاک ہجر میں یہ سینہ و جگر

اس وقت ٹرین مجھے مدینے سے دور دور کھینچے لیے جا رہی ہے سرکاش! بقیع ——

یا اللہ پاک میری اکلوتی بیٹی اور تینوں نواسیوں اور ان کی آل کو بے حساب بخشش اور بار بار مدینہ دکھا۔ آمین۔

صلوا علی الحبیب صلی اللہ علی محمد

हसरत भरे दिलों से हम आए हैं लौट कर
है चाक चाक हिज्र में येह सीना व जिगर

इस वक़्त ट्रेन मुझे मदीने से दूर दूर खींचे लिये जा रही है, काश ! बक़ीअ़......

या अल्लाह पाक ! मेरी इक्लोती बेटी और तीनों नवासियों और इन की आल को बे हि़साब बख़्श और बार बार मदीना दिखा। आमीन।

हाए ! मदीना छुट गया

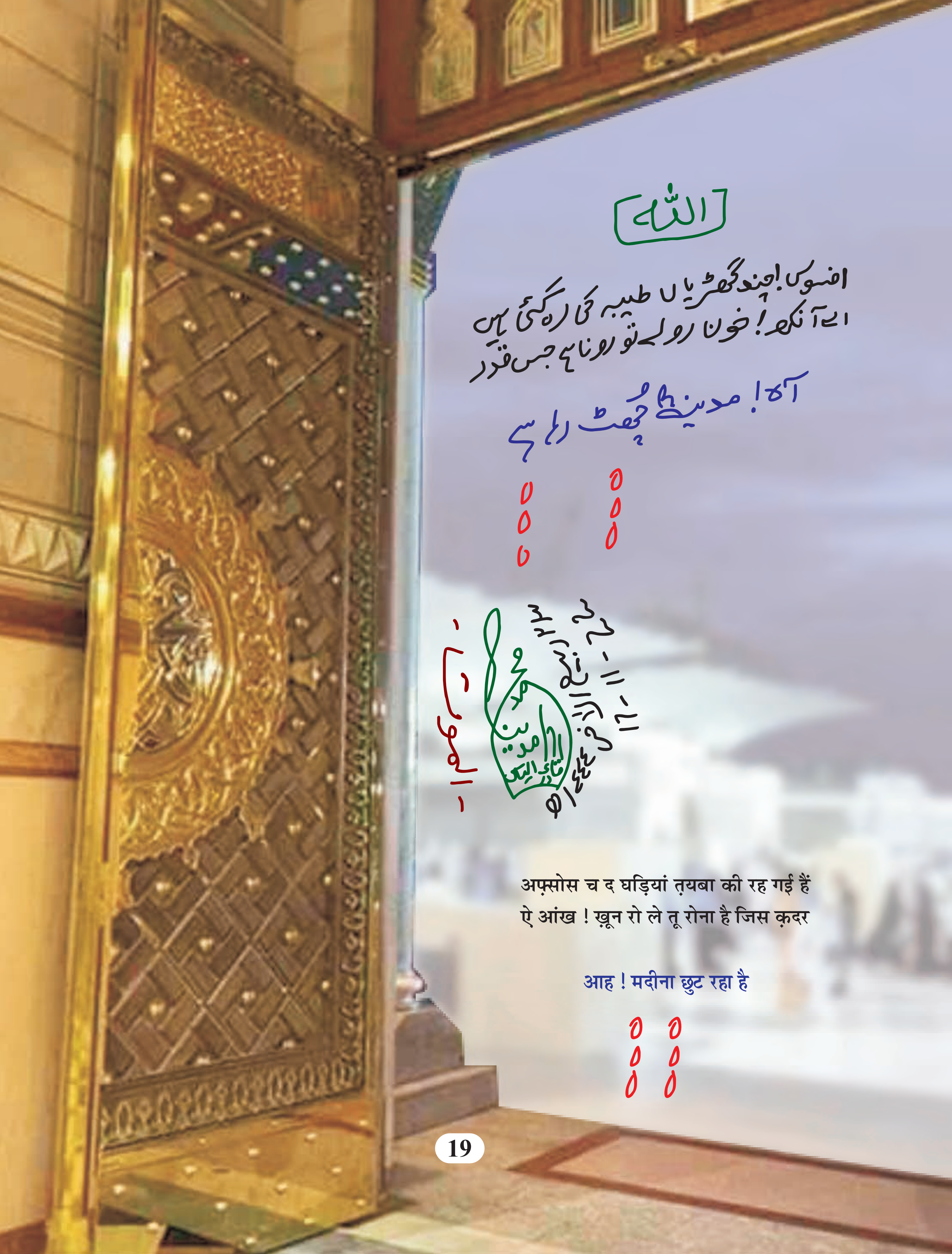

अफ़्सोस च द घड़ियां त़यबा की रह गई हैं
ऐ आंख ! ख़ून रो ले तू रोना है जिस क़दर

आह ! मदीना छुट रहा है

आह ! फ़िराक़े मदीना

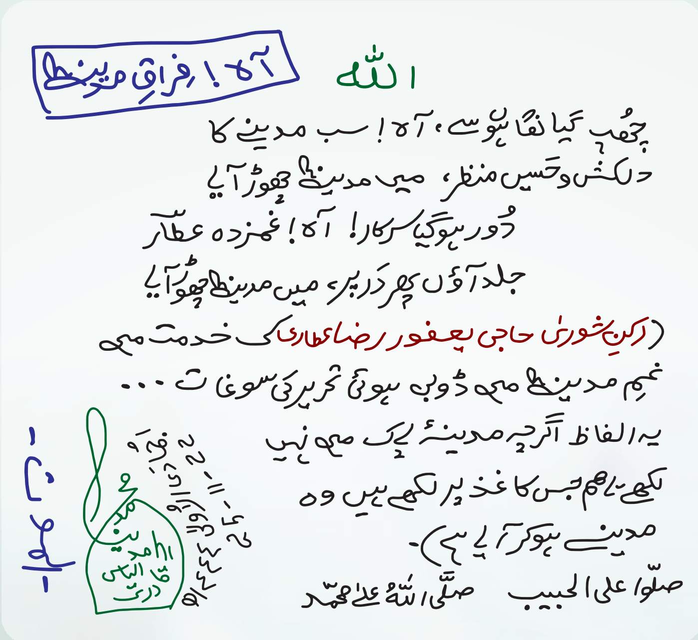
آہ! فراقِ مدینہ

اللہ

چھپ گیا نگاہوں سے، آہ! سب مدینے کا
دلکش و حسیں منظر، میں مدینہ چھوڑ آیا
دور ہو گیا سرکار! آہ! غمزدہ عطار
جلد آؤں پھر در پر، میں مدینہ چھوڑ آیا

(رکنِ شوریٰ حاجی یعفور رضا عطاری کی خدمت میں
غمِ مدینہ میں ڈوبی ہوئی تحریر کی سوغات...
یہ الفاظ اگرچہ مدینۂ پاک میں نہیں
لکھے تاہم جس کاغذ پر لکھے ہیں وہ
مدینے ہو کر آیا ہے۔)

صلوا علی الحبیب صلی اللہ علی محمد

छुप गया निगाहों से, आह ! सब मदीने का
दिलकशो ह़सीं मन्ज़र, मैं मदीना छोड़ आया

दूर हो गया सरकार ! आह ! ग़मज़दा अ़त्तार
जल्द आऊं फिर दर पर, मैं मदीना छोड़ आया

येह अल्फ़ाज़ अगर्चे मदीनए पाक में नहीं लिखे ताहम जिस काग़ज़ पर लिखे हैं वोह मदीने हो कर आया है।)

٧٨٦

الحمدللہ سامنے مسجد
الحرام کے مینار نور برسا رہے
ہیں۔ ہمارے سیدھے ہاتھ پر
جو عمارت نظر آرہی ہے۔ یہ
شاہ خالد کا محل ہے جو دنیا
کے سب سے قدیم پہاڑ جبلِ
ابی قبیس پر بنا ہوا ہے۔
کہتے ہیں اس پہاڑ پر حضرت
آدم علیہ السلام کا مزار ہے۔
جنت سے جب "حجرِ اسود" اترا
تو اسی پہاڑ پر ایک ماہ رہا۔
اسی پہاڑ پر چاند کے دو ٹکڑے
سرکار صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہ وسلم
نے فرمائے — سگِ مدینہ عفی عنہ
٥ ذوالحجۃ الحرام
١٤٢١ھ

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہ सामने मस्जिदुल ह़राम के मीनार नूर बरसा रहे हैं। हमारे सीधे हाथ पर जो इ़मारत नज़र आ रही है, येह शाह ख़ालिद का महल है जो दुन्या के सब से क़दीम पहाड़ जबले अबी क़ुबैस पर बना हुवा है। कहते हैं इस पहाड़ पर ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام का मज़ार है। जन्नत से जब "ह़जरे अस्वद" उतरा तो इसी पहाड़ पर एक माह रहा। इसी पहाड़ पर चांद के दो टुकड़े सरकार صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाए।

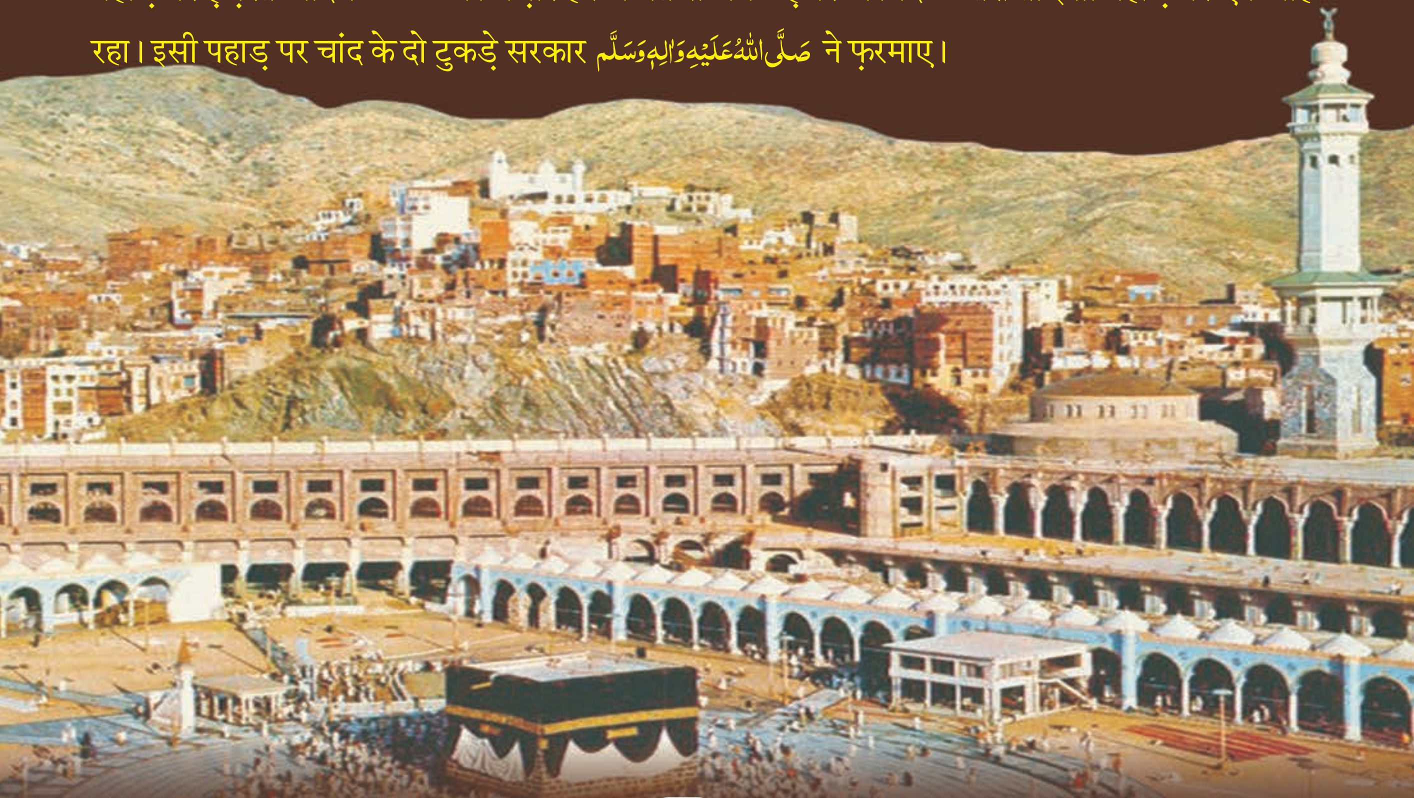

तहरीरे अ़रब शरीफ़

हमारे मीठे मीठे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने कभी भी अपने ज़बाने पाक से कोई फ़ालतू लफ़्ज़ नहीं निकाला, न ही कभी क़ह्क़हा मार के हंसे।

ऐ काश ! येह सुन्नतें ज़िन्दा हों और ख़ामोशी की ने'मत नसीब हो जाए।

(अ़रब शरीफ़ की ख़ुश गवार फ़ज़ाओं में लिखी हुई इस तह़रीर को दिखाने का एक मक़्सद येह भी है कि अगर दिखाने वाला गुफ़्तगू में दिलचस्पी न ले तो नाराज़ न हों। शुक्रिय्या)

नोट : पढ़ कर वापस लौटा दें।

٧٨٦

الصّلوٰۃ والسّلام علیک یا رسول اللہ

تحریرِ عرب شریف

" ہمارے میٹھے میٹھے آقا صلی اللہ علیہ وسلم نے کبھی
بھی اپنی زبانِ پاک سے کوئی فالتو لفظ نہیں نکالا،
نہ ہی کبھی قہقہہ مار کر ہنسے۔
اے کاش! یہ سنتیں زندہ ہوں اور
خاموشی کی نعمت نصیب ہو جائے۔

(عرب شریف کی خوشگوار فضاؤں
میں لکھی ہوئی اس تحریر کو دکھانے
کا ایک مقصد یہ بھی ہے کہ اگر
دکھانے والا گفتگو میں دلچسپی
نہ لے تو ناراض نہ ہوں۔ شکریہ)
نوٹ: پڑھ کر واپس لوٹا دیں۔

۱۵ ذوالحجۃ الحرام ۱۴۴۰ھ — الله — طیبہ کو چلو طیبہ!

قافلہ سوئے مدینہ آ رہا ہے ہو کرم

قافلہ سوئے مدینہ آ رہا ہے ہو کرم
سوزشِ سینہ عطا ہو یا نبی دو چشمِ نم

قافلہ اب چل مدینے کا چلا سوئے حرم
یا رسول اللہ! سب پر کیجئے چشمِ کرم

قافلے میں چل مدینے کے ہیں جتنے بھی شریک
سب پہ ہو رحمت خدا کی مصطفٰے کا ہو کرم

شاہِ والا! میں گنہگاروں کا بھی سردار ہوں
تم شہِ ابرار ہو یا سیّدِ عرب و عجم

فضلِ رب سے آپ تو ہر چیز کے مختار ہیں
عرشِ اعظم آپ کا ہے، آپ کے لوح و قلم

یا نبی مجھ کو بنا دو تم مدینے کا فقیر
میں نہیں، ہرگز نہیں ہوں طالبِ جاہ و حشم

یا نبی! ہم کو شفاعت کی عطا خیرات ہو
عاصیوں کا آپ کے ہاتھوں میں ہے آقا بھرم

گنبدِ خضرا کو چومے جس گھڑی میری نظر
اُس گھڑی الله! دیکھو جلوۂ شاہِ اُمم

دم لبوں پر آ گیا عطار کا یا مصطفٰے!
ہو کرم شاہِ حرم! نکلے ترے جلووں میں دم

(مکہ مکرمہ میں ۱۴ ذوالحجہ ۱۴۴۰ھ کو سات اشعار لکھے پھر ۱۵ ذوالحجہ کو مدینۂ پاک جاتے ہوئے [illegible] سواری میں دو اشعار کا اضافہ کیا)

۱۵ ذوالحجۃ الحرام ۱۴۴۰ھ
۱۷-۸-۱۹
محمد الیاس عطار قادری [illegible]

तयबा को चलो तयबा ! الیاس 15 ज़ुल हिज्जतिल हराम 1440 हि.

क़ाफ़िला सूए मदीना आ रहा है हो करम

क़ाफ़िला सूए मदीना आ रहा है हो करम
सोज़िशे सीना अ़ता हो या नबी दो चश्मे नम

क़ाफ़िला अब चल मदीना का चला सूए हरम
या रसूलल्लाह ! सब पर कीजिये चश्मे करम

क़ाफ़िले में चल मदीना के हैं जितने भी शरीक
सब पे हो रहमत ख़ुदा की मुस्तफ़ा का हो करम

शाहे वाला ! मैं गुनहगारों का भी सरदार हूं
तुम शहे अबरार हो या सय्यिदे अ़रबो अ़जम

फ़ज़्ले रब से आप तो हर चीज़ के मुख़्तार हैं
अ़र्शे आ'ज़म आप का है, आप के लौहो क़लम

या नबी मुझ को बना दो तुम मदीने का फ़क़ीर
मैं नहीं, हरगिज़ नहीं हूं तालिबे जाहो हशम

या नबी ! हम को शफ़ाअ़त की अ़ता ख़ैरात हो
आ़सियों का आप के हाथों में है आक़ा भरम

गुम्बदे ख़ज़रा को चूमे जिस घड़ी मेरी नज़र
उस घड़ी **अल्लाह** ! देखूं जल्वए शाहे उमम

दम लबों पर आ गया अ़त्तार का या मुस्तफ़ा
हो करम शाहे हरम ! निकले तेरे जल्वों में दम

(मक्कए मुकर्रमा में 14 ज़ुल हिज्जा 1440 हि. को सात अश्आ़र लिखे, फिर 15वीं रात मदीनए पाक जाते हुए ट्रेन में नोक पलक संवारी और दो अश्आ़र का इज़ाफ़ा किया।)

۷۸۶

الحمد للہ عزوجل یہ الفاظ تحریر کرتے وقت میں مسجد النبوی الشریف علیٰ صاحبہا الصلوۃ والسلام میں حاضر ہوں۔ اور آقا صلی اللہ علیہ وسلم کی سواری کے اُس خوش نصیب.... کو یاد کر رہا ہوں جس کا نام "یعفور" تھا اور آرزو ہے.... حسرت ہے.... اُس خوش بخت یعفور پر رشک ہے... کاش میں یعفور کے قدموں میں سے کسی ایک قدم کا کھر ہوتا۔

ع کاش خر یا خچر یا گھوڑا بن کر آتا اور
آپ نے بھی کھونٹے سے باندھ کر رکھا ہوتا

جی چاہتا ہے کسی کو یعفور کہہ کر پکارا کروں لھٰذا حاجی فیاض کا نام آج سے محمد اور پکارنے کیلئے یعفور رضا رکھتا ہوں۔

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ येह अल्फ़ाज़ तह़रीर करते वक़्त मैं मस्जिदुन्नबविय्यिश्शरीफ़ عَلٰی صَاحِبِہَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام में ह़ाज़िर हूं। और आक़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सुवारी के उस खुश नसीब...... को याद कर रहा हूं जिस का नाम ''या'फ़ूर'' था और आरज़ू है...... ह़सरत है...... उस खुश बख़्त या'फ़ूर पर रश्क है...... काश मैं या'फ़ूर के क़दमों में से किसी एक क़दम का खुर होता...

काश ख़र या ख़च्चर या घोड़ा बन कर आता और
आप ने भी खूंटे से बांध कर रखा होता

जी चाहता है किसी को या'फ़ूर कह कर पुकारा करूं लिहाज़ा ह़ाजी फ़य्याज़ का नाम आज से मुह़म्मद और पुकारने के लिये या'फ़ूर रज़ा रखता हूं।

اللہ

جیسے چاہے تو جہاں میں گھوم پھر
یہ مدینہ ہے یہاں آہستہ چل

مدینے کے زائرین کو
نہایت ادب سے
رہنا چاہیئے۔

کہیں ایسا نہ
ہو سارا سفر بے کار
ہو جائے۔

जैसे चाहे तू जहां में घूम फिर
येह मदीना है यहां आहिस्ता चल

मदीने के ज़ाइरीन को निहायत अदब से रहना चाहिये ।

कहीं ऐसा न हो सारा सफ़र बेकार हो जाए

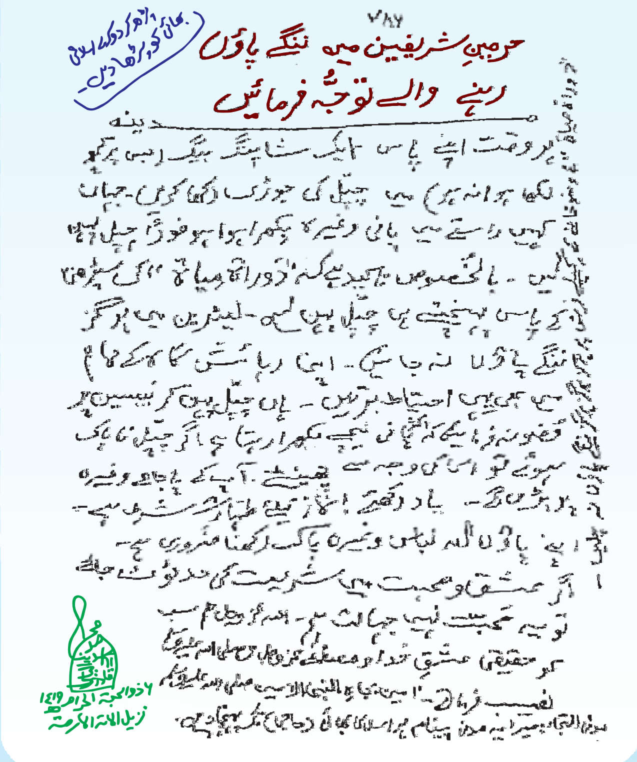
حرمین شریفین میں ننگے پاؤں
رہنے والے توجہ فرمائیں

ह़रमैने शरीफ़ैन में नंगे पाउं रहने वाले तवज्जोह फ़रमाएं !

(पढ़ कर दूसरे इस्लामी भाई को पढ़ा दें)

हर वक़्त अपने पास एक शोपिंग बेग (जिस पर कुछ लिखा हुवा न हो) में चप्पल की जोड़ी रखा करें। जहां कहीं रास्ते में पानी वग़ैरा बिखरा हुवा हो, फ़ौरन चप्पल पहन लें। बिल ख़ुसूस ताकीद है कि ''दौराते मियात'' की सीढ़ी के पास पहुंचते ही चप्पल पहन लें। लेट्रीन में हरगिज़ नंगे पाउं न जाएं। अपनी रिहाइश गाह के ह़म्माम में भी येही एह़तियात़ बरतें। हां चप्पल पहन कर बेसिन पर वुज़ू न फ़रमाएं कि अक्सर पानी नीचे बिखरा रहता है, अगर चप्पल नापाक हुए तो उस की वज्ह से छींटे आप के पाजामे वग़ैरा पर पड़ेंगे। याद रखिये ! नमाज़ के लिये त़हारत शर्त़ है। अपने पाउं और लिबास वग़ैरा पाक रखना ज़रूरी है। अगर इ़श्क़ो मह़ब्बत में शरीअ़त की ह़द टूट जाए तो येह मह़ब्बत नहीं जहालत है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हम सब को ह़क़ीक़ी इ़श्क़े ख़ुदा व मुस्त़फ़ा عَزَّوَجَلَّ و صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم नसीब फ़रमाए।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

मदनी इल्तिजा : मेरा येह मदनी पैग़ाम हर इस्लामी भाई (ह़ाजी) तक पहुंचा दें।

''दौराते मियात'' के वुज़ूख़ाने के गीले फ़र्श पर हरगिज़ हरगिज़ नंगे पाउं न चलें।

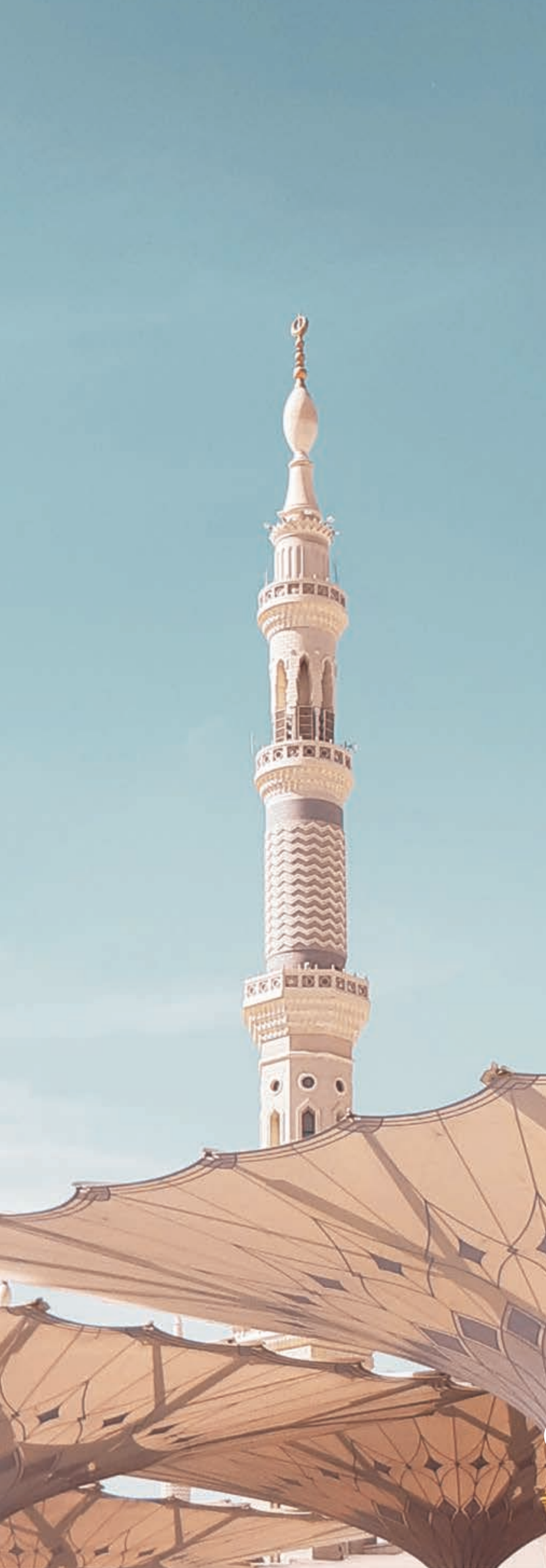

الله

قافلۂ چل مدینہ کے عاشقانِ رسول کی
خدمات میں : السلام علیکم ورحمۃ اللہ وبرکاتہ
ماشاءاللہ! مختلف اسلامی بھائیوں کی طرف سے
دعائیہ پیغامات موصول ہوئے، اللہ پاک سبھی
کو اجرِ عظیم عطا فرمائے اور بے حساب مغفرت
سے مشرف فرمائے۔ میرے حق میں بھی یہ دعا قبول
ہو ۔ آمین۔ آہ! میں اپنے گھر میں اکیلا بیٹھا ہوں

میں مدینے سے کیا آ گیا ہوں،
زندگی جیسے بجھ سی گئی ہے
گھر کے اندر فضا سونی سونی،
گھر کے باہر سماں خالی خالی

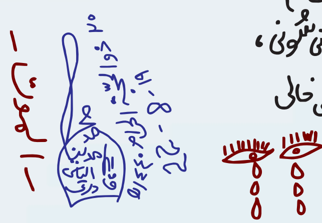

آہ! سب سماں ہو گیا
سونا سونا

क़ाफ़िलए चल मदीना के आ़शिक़ाने रसूल की ख़िदमात में :

اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللهِ وَبَرَكَاتُهُ

مَاشَآءَ الله ! मुख़्तलिफ़ इस्लामी भाइयों की त़रफ़ से दुआ़इया पैग़ामात मौसूल हुए, **अल्लाह** पाक सभी को अज्रे अ़ज़ीम अ़त़ा फ़रमाए और बे ह़िसाब मग़्फ़िरत से मुशर्रफ़ फ़रमाए। मेरे ह़क़ में भी येह दुआ़ क़बूल हो। आमीन। आह! मैं अपने घर में अकेला बैठा हूं।

मैं मदीने से क्या आ गया हूं, ज़िन्दगी जैसे बुझ सी गई है
घर के अन्दर फ़ज़ा सूनी सूनी, घर के बाहर समां ख़ाली ख़ाली

आह ! सब समां हो गया सूना सूना

اللہ*

قافلۂ چل مدینہ کے اسلامی بھائیوں اور اسلامی بہنوں کی خدمتوں میں: السّلامُ علیکم ورحمۃ اللہ وبرکاتہ۔
میں امارات میں اپنی قیام گاہ پہنچ گیا ہوں، مگر اس بات کا احساس ہے کہ آپ کو تقریباً 8 گھنٹے مطار پر گزارنے پڑیں گے۔ اللہ پاک صبر عطا فرمائے۔ اور سفر بخیر کرے۔ آمین۔

آتے ہوئے کیا سہل مدینے کا سفر تھا
جاتے ہوئے ایک ایک قدم راہ کڑی ہے
روتے ہوئے پہنچے تھے روتے ہوئے لوٹے ہیں
چند وصل کی گھڑیاں تھیں اب ہجرِ مدینہ ہے

20-8-19 قادری

क़ाफ़िलए चल मदीना के इस्लामी भाइयों और इस्लामी बहनों की ख़िदमतों में :

اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهٗ

मैं इमारात में अपनी क़ियाम गाह पहुंच गया हूं, मगर इस बात का एह़सास है कि आप को तक़्रीबन 8 घन्टे मत़ार पर गुज़ारने पड़ेंगे। **अल्लाह** पाक सब्र अ़त़ा फ़रमाए और सफ़र बख़ैर करे। आमीन।

आते हुए क्या सह्ल मदीने का सफ़र था
जाते हुए एक एक क़दम राह कड़ी है
रोते हुए पहुंचे थे रोते हुए लौटे हैं
चन्द वस्ल की घड़ियां थीं अब हिज्रे मदीना है

* दा'वते इस्लामी की इस्तिलाह़ में अमीरे अहले सुन्नत के साथ सफ़रे मदीना की सआ़दत पाने को "चल मदीना" कहते हैं। 2019 के क़ाफ़िलए चल मदीना के आ़शिक़ाने रसूल का सफ़रे मदीना से वापसी पर अ़रब इमारात एरपोर्ट पर तक़्रीबन 8 घन्टे का Stay था। अमीरे अहले सुन्नत अपनी क़ियाम गाह पहुंचे तो कुछ इस त़रह़ हमदर्दी व ख़ैर ख़्वाही फ़रमाई....

اللّٰہ

آہ! جنّت البقیع تو نہ ملی، "بیت البقیع" (باب المدینہ میں) پہنچ گیا ہوں۔

آہ! مدینہ چھوڑ آیا!

आह ! जन्नतुल बक़ीअ़ तो न मिली ''बैतुल बक़ीअ़'' पहुंच गया हूं। आह ! मदीना छोड़ आया !

الله

جُمُعہ مبارک

حاجی عمران! آپ کو بھی میری اور
حاجی علی رضا کی طرف سے جُمُعہ
مبارک! دل ہجرِ مدینہ کے
سبب اس قدر اُداس ہے
کہ الفاظ میں بیاں کرنے سے
قاصر ہوں۔ آہ! صرف "ڈھائی دن"
کی حاضری کے بعد جدائی ہوگئی۔

جو لمحے تھے سُکوں کے سب مدینے میں گزار آئے
دلِ بے چین کو کیونکر وطن میں اب قرار آئے

١٤٣٩ھ
-الموت-

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب!
صلی اللہ علی محمد

जुमुआ मुबारक

हा़जी इ़मरान ! आप को भी मेरी और हा़जी अ़ली रज़ा की त़रफ़ से जुमुआ़ मुबारक ! दिल हिज्रे मदीना के सबब इस क़दर उदास है कि अल्फ़ाज़ में बयान करने से क़ासिर हूं । आह ! सिर्फ़ ढाई दिन की हा़ज़िरी के बा'द जुदाई हो गई ।

जो लम्हे़ थे सुकूं के सब मदीने में गुज़ार आए
दिले बेचैन को क्यूंकर वत़न में अब क़रार आए

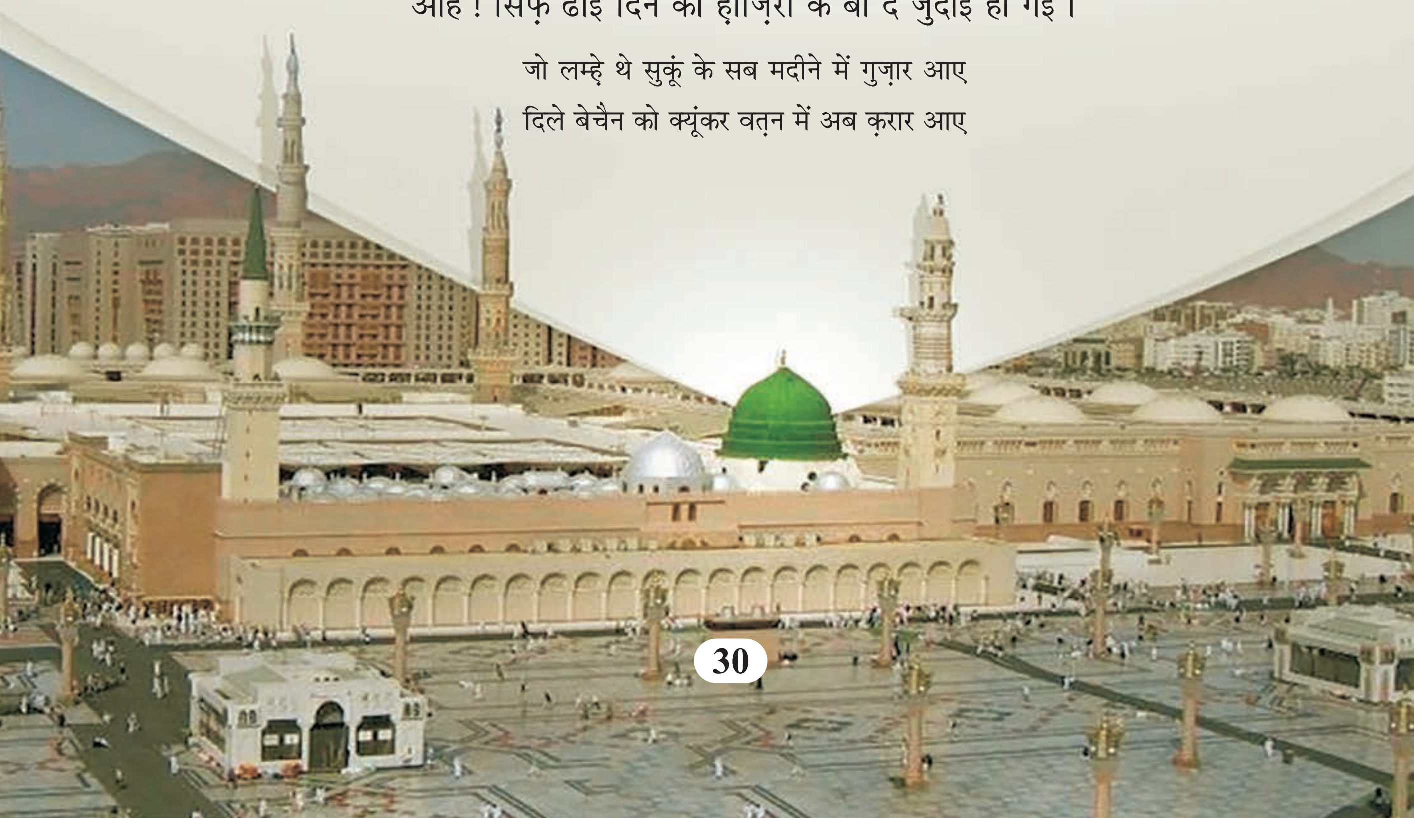

सफ़रे मदीना मुबारक, मेरा सलाम अ़र्ज़ करना। दुआ़ भी करना।

* मदीने जाने वाले एक आ़शिक़े रसूल के नाम अमीरे अहले सुन्नत की तह़रीर

दुआए अ़त्त़ार

या रब्बल मुस्त़फ़ा ! जो कोई 32 सफ़ह़ात का रिसाला बनाम **"यादे मक्का व मदीना"** पढ़ या सुन ले, उसे मक्के मदीने की सच्ची महब्बत दे और उस को मक्के मदीने की बार बार बा अदब ह़ाज़िरी नसीब फ़रमा।

اٰمین بجاہِ خاتم النّبیّٖن صلّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلّم